UTKAL UNIVERSITY
NAAC A+ Accredited

Platinum Jubilee Celebration

1943-2018 and beyond

CELEBRATING 75 YEARS EXCELLENCE

Souvenir

Book of Memories

UTKAL UNIVERSITY

Bhubaneswar - 751004

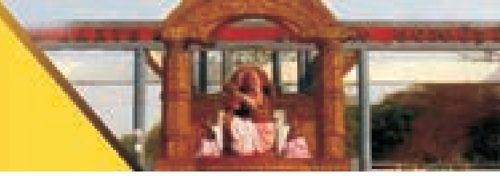

उत्कल विश्वविद्यालय स्मृति के आईने में

हमारे देश की राजधानी भुवनेश्वर में स्थित उत्कल विश्वविद्यालय की स्थापना २७ नवम्बर १९४३ में हुई | इसे वाणी विहार के नाम से भी जाना जाता है | यह भारत के सत्रह पुराने विश्वविद्यालयों में से एक है | यह ३९९.९ एकड़ में व्याप्त है | इसके अधीन २६७ महाविद्यालय है | साथ ही १५ विधिमहाविद्यालय भी इसके अधीन है | उत्कर्ष कलाओं के इस देश में उत्कल विश्वविद्यालय अपना एक विशेष स्थान रखता है | जब तक इसकी अपनी जमीन और मकान नहीं थे तब तक इसका काम रेवेंशा विश्वविद्यालय में ही चलता था |

यहाँ बच्चों के पढ़ने के लिए अन्य सभी महत्वपूर्ण विषय तो थे पर जनादृत भाषा हिंदी का विभाग नहीं खुला था | हाँ, हिंदी को डिप्लोमा के रूप में अवश्य पढ़ाया जाता था | इस विभाग के अध्यापक के सेवा निवृत्ति के उपरान्त वह भी बंद हो गया | जब तक डिप्लोमा की कक्षाएँ चलती थी तब तक एक क्षीण आशा की किरण थी कि कभी न कभी विद्यार्थियों को अवसर मिलेगा कि वें उत्कल विश्वविद्यालय में एम.ए में हिंदी विषय ले कर पढ़ पायेंगे | लेकिन उस पर भी पानी फिर गया जब डिप्लोमा की कक्षाएँ बंद कर दी गई |

मैंने अपने सहकर्मी तथा पूर्व प्राध्यापकों से सुना था कि उन लोगों ने उत्कल विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग खुलवाने की भरसक कोशिश की थी पर नाकामयाब रहें | इस लाल फितासाही में सब कुछ दब कर रह गया था | मैं भी अपने साथियों के साथ मिल कर अस्सी दशक से हिंदी विभाग खुलवाने का प्रयास करती रही | पर हम सब इसमें सफल नहीं हो पा रहे थे |

सौभाग्य से वर्तमान के कुलपति महोदय की प्रेरणा, निष्ठा और चेष्टा के कारण हम इस वर्ष जब उत्कल विश्वविद्यालय १५० वर्ष का हो गया तब हिंदी खुलवाने में सक्षम रहे | खैर यही आशा रखते है कि देर आये पर दुरुस्त आये |

उत्कल विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग की प्रतिष्ठा के लिए प्रो.राधाकांत मिश्र, प्रो.तारिणी चरण दास, डॉ. अजय कुमार पट्टनायक, प्रो.रविन्द्रनाथ मिश्र, रघुनाथ महापात्र आदि ने अथक परिश्रम किये थे | मैं स्वयं भी उनके साथ रही | अब हम सब सेवा निवृत्त हो चुके हैं | पर हमें संतोष है कि जनादृत भाषा हिंदी का विभाग वाणी विहार में खुल गया | इस प्रसंग क्रम में एक बात और अवश्य सूचित करना चाहूँगी कि उत्कल विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग ने अपनी खूब उदारता दिखाई | आज के इस स्वार्थान्ध समय में संस्कृत विभाग के सह-प्राध्यापक डॉ.सुबास चन्द्र दास ने संस्कृत के साथ-साथ हिंदी की भी खूब सेवा की | उनका रोज़ रोज़ बगल फ़ाइल उठाकर कुलपति के कार्यालय जाना, उन्हें यह अनुरोध करना कि वे

अपने विभाग में हिंदी एम्.ए के बच्चों को पढ़ने-पढ़ाने की सुविधा मुहय्या करवाएंगे, सब कुछ हमने देखा और जाना है | एक इंच भूमि के लिए जहाँ महाभारत का युद्ध हुआ था वहाँ ऐसी उदारता ? 'ऐसो को उदार जग माही' | संस्कृत विभाग ही ऐसा कर सकता था जो भारतीय संस्कृति तथा जीवन दर्शन को अपने में समेट कर चलता है |

अब हिंदी विभाग उत्कल विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अधीन है| कक्षाएँ सुचारू रूप से चल रही हैं | संस्कृत विभाग का पूर्ण सहयोग हमें मिल रहा है | इसलिए यह विभाग धन्यवाद का पात्र है | जब कभी हमारी कक्षा में संस्कृत विभाग के विशेष कार्यक्रम होते हैं तब वे हमारी कक्षाएँ जरुरत पड़ने पर पुस्तकालय या फिर अध्यापक-कक्ष में भी करवा देते है |

यह तो सच है कि उत्कल विश्वविद्यालय में हिंदी में स्नातकोत्तर विभाग को खुलने में इतना लम्बा समय लगा पर बीच-बीच में इस विश्वविद्यालय ने हिंदी अध्यापकों की खूब सहायता की है | आज हिंदी में जो बी.एच.ई.डी का कार्यक्रम चल रहा है | उसे खुलवाने में भी उत्कल विश्वविद्यालय ने खूब मदद की | पहले यह स्कूल के अधीन था, जिससे हमारे विद्यार्थियों को नौकरी पाने में बहुत दिक्कत होती थी | आगरा में भी कुछ पचास सीटें ही है और वहाँ बी.एड करने के लिए ओड़िशा से सिर्फ चार पाँच बच्चे ही उत्तीर्ण हो कर जा पाते हैं | अब बी.एच.ई.डी में अधिक बच्चे पढ़ पा रहे है | इसी कारण विभिन्न विद्यालयों में भी उनके लिए नौकरी सुलभ हो गई |

इस तरह हिंदी भाषा साहित्य की यह धारा उत्कल विश्वविद्यालय में भी कभी रूकती कभी क्षीण होती हुई आज फिर से पल्लवित हो रही है | इसीलिए कहा गया है जहाँ चाह है वहाँ राह है | इसलिए ओड़िशा भर के हिंदी प्रेमी इस बात की आस लगाये बैठे हैं कि उत्कल विश्वविद्यालय में एम.फिल और पी.एच.डी जरुर खुलेगा | जब विश्वविद्यालय में हम यहाँ तक आ पहुँचे है तो कुलपति महोदय, संस्कृत विभाग तथा अन्य अधिकारियों के सहयोग से इस विभाग का पल्लवन अवश्य होगा |

मैं पुनः उत्कल विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय, सचिव, परीक्षा नियंत्रक, संस्कृत विभाग और विशेष रूप से डॉ. सुबास चन्द्र दास के प्रति अपना और हिंदी जगत का आभार व्यक्त करती हूँ | सर्वे भवन्तु सुखिनः की राह पर हम इसी तरह चलते रहें |

प्रो.स्मरप्रिया मिश्र
(सेवानिवृत्त)
हिंदी विभाग, रेवेंशा विश्वविद्यालय, कटक,ओड़िशा

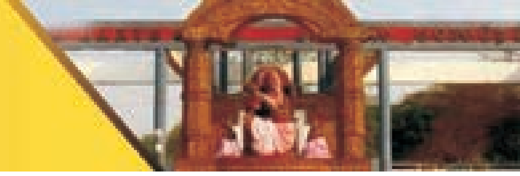

राधाकांत मिश्र

ओड़िशा का एक नाम उत्कल पड़ गया, क्योंकि यह उत्कृष्ट कलाओं का देश है। यहाँ के मंदिर की कला, मूर्तिकला, नृत्यकला, संगीतकला, वस्त्रवयन की कला, चित्रकला सभी में अद्भुत उत्कर्ष है। यहाँ का जगन्नाथ धाम सर्वधर्म समन्वय का संदेश देता है। यहाँ के पाइकों (पदातिक सेना) की समरकला विजय की सिद्धि लानेवाली है। यहाँ की प्रकृति सुंदर है, भूमि शस्य श्यामला है, सुवर्ण-बालुका की वेलाभूमि है। इसलिए इसे मान्यता मिल गई कि उत्कल के समान देश भूतल में अन्यत्र नहीं है। रिक्थ की यह जोत आज भी जगमग है।

वैसे ही यहाँ का सर्वप्राचीन उत्कल विश्वविद्यालय उत्कृष्ट विद्याओं की संस्था है। इसकी प्लेटिनम जुबिली मनायी जा रही है। इसके अनगिनत प्राचीन और आधुनिक विद्याशाखाओं को देश-विदेश से प्रशंसा-पत्र मिले हैं। इस विश्वविद्यालय के विद्यार्थी पूरे विश्व में फैले हुए हैं। इसके परिवेश, गुणात्मक शिक्षा, अनमोल शोधकार्य, इसके प्राध्यापक और विद्यार्थी सब उत्कृष्टता की टकसाल की उपज हैं, उत्कर्ष के उदाहरण बन चुके हैं। कटक में इस विश्वविद्यालय का बचपन बीता। विकास भुवनेश्वर में आकर हुआ। चार सौ एकड़ लगभग जमीन है। कई बड़े-बड़े भवन बने हैं। कटक के रेवेन्शा कॉलेज से अलग इसके विभाग स्थापित हुए। १९४३ का झिलमिल दीपक आज चमचमा उठा है।

इसी वर्ष इस अहिन्दीभाषी क्षेत्र के इस सर्वप्राचीन विद्यामंदिर में राष्ट्रभाषा हिंदी का विभाग खोलकर मान्यवर कुलपति और कर्तृपक्ष ने राष्ट्रीय एकता को प्रसारित करनेवाली एक नई जोत जगायी है। दरअसल इस विश्वविद्यालय में पहले प्रारंभिक चरण में हिंदी का डिप्लोमा पाठ्यक्रम खोला गया था। कुछ वर्ष उसका काम चला फिर उस प्राध्यापक के देहांत के बाद वह बंद हो गया। विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग खोलने के लिए छात्रों की ओर से बराबर दावे किए जाते थे लेकिन उन्हें सफलता मिली इस प्लेटिनम जुबिली वर्ष में ही। हमारी आशंसा है- अयमारंभ: शुभाय हो। यह विभाग द्रुत गति से फूले-फले यह सबकी इच्छा है।

ऐसे मौके पर स्मृतियों की एक लड़ी झलमला रही है। तब शिक्षाविभाग का अधिक विभाजन नहीं हुआ था। उत्कल विश्वविद्यालय हाईस्कूल की मैट्रिक्युलेशन परीक्षा का संचालन करता था। मैंने १९५५ में यहीं से मैट्रिक पास कर विद्यारंभ किया था। जब राजेन्द्र कॉलेज बलांगीर में इंटर पढ़ने गया तो हिंदी पढ़ाई की व्यवस्था वहाँ नहीं थी। मैंने हिंदी विषय लेने का संकल्प किया। प्रिंसिपल ने लिखा कि मुझे घरेलु रूप में हिंदी पढ़ने और परीक्षा देने की अनुमति दी जाए। विश्वविद्यालय ने स्वीकृति दे दी। मैंने इंटर और बी.ए. की परीक्षा में हिंदी विषय को बिना अध्यापक के पढ़ा, परीक्षा में पास हुआ। फिर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में मैंने हिंदी में एम.ए. किया, परीक्षा में दूसरा स्थान प्राप्त किया। हिंदी शिक्षण संस्थान का प्रिंसपल बना। फिर हिंदी अधिकारी। हाईस्कूल परीक्षा मे हिंदी को अनिवार्य विषय स्वीकृत कराने की सफल योजनाएँ पूरी की। ओड़िशा सरकार के आदेशानुसार सभी स्कूल में हिंदी की पढ़ाई होने लगी। कई महाविद्यालयों में हिंदी ऐच्छिक और आनर्स के पाठ्यक्रम में शामिल हुई। आज ओड़िशा के अनेक कॉलेजों में तथा कई विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तर हिंदी विभाग खुल गए हैं। तब ओड़िशा का प्रथम विश्वविद्यालय इस विकास-क्रम में पीछे कैसे रह सकता था?

अंतिम बात! मैंने विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के द्वारा प्रतिष्ठित विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन में प्राध्यापक के रूप में कुछ वर्ष कार्य किया। मुझे आश्चर्य हुआ कि चालीस के दशक में गुरुदेव ने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अपने विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग खुलवा दिया था। महात्मा गाँधी ने हिंदी को राष्ट्रभाषा और राजभाषा बनाने का दृढ़ आग्रह किया था। संविधान में १४ सितंबर १९४९ को हिंदी को राजभाषा की पदवी दी गई। देशभरके सभी शिक्षासंस्थाओं में हिंदी के पठन-पाठन की व्यवस्था करवाने की अनुशंसा की गई। पर दुर्भाग्य से राजनीति की दलदल में भाषा की पवित्रता कलुषित हो गई। सच तो यह है कि कोई भी भाषा तोड़ती नहीं, जोड़ती है। हिंदी सदियों से भारतवर्ष के जन-जन के हृदयों को जोड़ती आ रही है। स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी ही राजनेताँ और जनता के बीच संपर्क-सूत्र रही। अत: इसके प्रचार-प्रसार के लिए काम करना राष्ट्रीय कर्तव्य है। इसी कर्तव्य को उत्कल विश्वविद्यालय ने इस पावन वर्ष में पूरा किया है।

मेरी शिक्षा के इस मातृ-संस्थान की सर्वत्र विजय हो!

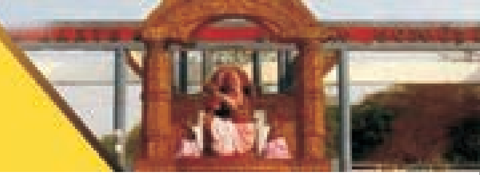

ये ऊँची-ऊँची छतरियाँ

स्नेहलता दास

बचपन से उच्च शिक्षा के प्रति मेरी अदम्य लालसा थी। न जाने कितनी बाधाओं को पारकर मैने रमादेवी महिला महाविद्यालय (अब विश्वविद्यालय) में दाखिला लिया। सौभाग्य से बचपन की स्पृहा की चिनगारी को हवा मिल गई। मैंने रमादेवी से बी.ए.(हिंदी) की परीक्षा पास की। प्रमाण पत्र मिला तो देखा-उत्कल विश्वविद्यालय। तब मैंने सोचा कि बगलवाला वह विश्वविद्यालय मेरे कॉलेज की नियामक संस्था है। मुझे गर्व महसूस हुआ कि मैं उत्कल विश्वविद्यालय का स्नातक बनी।

फ़िर सौभाग्य से रेवेन्शा महाविद्यालय में स्नातकोत्तर हिंदी विभाग में अध्ययन किया। वहाँ से जो प्रमाण पत्र मिला, वह भी उत्कल विश्वविद्यालय का ही था। तब तक मुझे इस विश्वविद्यालय का महत्व ज्ञात हो चुका था। यह मेरे प्रदेश का सर्वप्रथम विश्व-विद्यालय है। इसका कार्यक्षेत्र संपूर्ण प्रदेश तक व्याप्त है। यह देश के प्राचीन विश्वविद्यालय में से एक है। कटक-भुवनेश्वर के यात्रा-पथ में विश्वविद्यालय के पुस्तकालय की ऊँची छतरियाँ दृष्टिगोचर होने से उसकी महिमा का अनुभव करके मुझे अपार हर्ष होता रहता था।

पीएच.डी के लिए रेवेन्शा में ही मेरा नाम पंजीकृत हुआ। लेकिन अब मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ कि मैं उत्कल विश्वविद्यालय से यह डिग्री हासिल करूँगी। मैंने हिंदी 'नवजागरण और भारतेंदु' पर काम किया। विषय पुराना था, लेकिन मेरा शोध नए और मौलिक ज्ञान से मंडित हुआ। मैंने भारतीय नवजागरण और यूरोपीय नवजागरण के मौलकि अंतर को समझा। बंगला नवजागरण और ओड़िशा के नवजागरण के वैशिष्ट्य का विश्लेषण किया। इस कार्य में मैंने उत्कल विश्वविद्यालय के पुस्तकालय से काफी सामग्री जुटायी। रेवेन्शा महाविद्यालय में भी अनेक दुर्लभ ग्रंथ थे। मैं सुश्री से डॉक्टर में बदल गई। यह मेरा सौभाग्य था।

अब मेरा कर्मक्षेत्र रमादेवी विश्वविद्यालय है। अपने भवन पर खड़ी होकर जब मेरी आँखें उत्कल विश्वविद्यालय के भवन पर, खासकर लाईब्रेरी की छतरियों पर टिक जाती हैं तो उत्कल विश्वविद्यालय की मातृसत्ता की महनीयता मुझे रोमांचित कर देती है। आज उत्कल विश्वविद्यालय अनेक क्षेत्रों में नई ऊँचाई को छू रहा है। आज उसकी संतान रमादेवी महिला विश्वविद्यालय भी

सफलता के रास्ते पर चल पड़ा है। हिंदी का नया विभाग - उत्कल विश्वविद्यालय में हमारे अस्तित्व और अस्मिता को नया आयाम देगा।

मेरे इन प्यारे शिक्षा –प्रतिष्ठानों को शत-शत नमन।

काबिल मैं बन गई !

झुनुबाला खुण्टिआ

पास ही के गाँव से रमादेवी महाविद्यालय को पढ़ने आती थी और वाणीविहार के चौक में बाई ओर मुड़ती थी तो मनमें कभी-कभी यह तमन्ना झाँकती कि क्या दाई ओर उत्कल विश्वविद्यालय में कभी घूस सकूँगी ? जब रमादेवी में बी.ए कर चुकी तो पता लगा कि उत्कल विश्वविद्यालय में घरेलू तरीके से हिंदी में एम.ए. करने का प्रावधान है। साधनहीन एक लड़की के भाग्य से छींका टूटा। मै फौरन हिंदी पढ़ने लगी। अपनी अध्यापिकाओं से मदद ली और समय आने पर हिंदी में एम.ए.की डिग्री हासिल की। तभी मेरे मन में यह आशा जगी कि छायावादी काव्य और रवीन्द्रनाथ पर शोधकार्य करूँ। मेरा सौभाग्य था मेरा प्रस्ताव मेरे निर्देशक प्रोफेसर राधाकांत मिश्र जी ने मान लिया। मैं बराबर उत्कल विश्वविद्यालय के पुस्तकालय जाती रही, पढ़ती रही और गुरुदेव के तत्वावधान में शोध कार्य करती रही। परिजा लाईब्रेरी के कर्मचारियों की सहायता और सौहार्द्र से काम करना और आसान हो गया। उस पुस्तकालय और उन सहृदय कर्मचारियों के बिना काम पूरा करना असंभव हो जाता क्योंकि उस पुस्तकालय में रवीन्द्रनाथ ठाकुर पर दुर्लभ और मेरे शोधकार्य के लिए उपयोगी ऐसी कई पुस्तकें मुझे प्राप्त हुई जिसका अन्यत्र कहीं जुगाड़ करना मेरे वश की बात ही नहीं थी। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ के बारे में ज्यादा जानकारी के लिए मैं शांतिनिकेतन गई। वहाँ के विश्वभारती विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के पुस्तकालय का भी लाभ उठाया। वहाँ उस कार्य में प्रोफेसर रवीन्द्रनाथ मिश्र जी ने अनेक प्रकार से मेरी मदद की। इस शोधकार्य के चलते हमारे प्रांत के हरेकृष्ण महताब स्टेट लाईब्रेरी को भी मैं जाती रही। वहाँ भी ऐसे अनेक विद्यानुरागी, सहृदय कर्मचारीगण मुझे मिले जिनका सहयोग सराहनीय है। इन सभी सहृदय तथा महानुभवों के सहयोग विशेषकर उत्कल विश्वविद्यालय के परिजा पुस्तकालय के कर्मचारियों के सहयोग के कारण मेरा शोध कार्य सफल हुआ। परीक्षकों ने उसकी बड़ी तारीफ की। मुझे पीएच.ड़ी की उपाधि हालही में मिल गई। उत्कल विश्वविद्यालय की छत्रछाया में मेरा काम अनायास ही हो गया। काबिल मैं बन गई।

मुझे अभी जो यू.एन.ऑटोनोमोश कॉलेज में अध्यापिका होने का सौभाग्य मिला, मैं उसका श्रेय उत्कल विश्वविद्यालय को ही देती हूँ। आज जब यहाँ हिंदी का स्वतंत्र शिक्षण विभाग

चालू हुआ तो मैं सर्वाधिक प्रसन्न हूँ क्योंकि मेरे पीछे आनेवाली पीढ़ी को इससे अनेक लाभ मिलेगा। काबिल तो मैं बन गई और इस पावन संस्थान के कारण आप सब भी मुझसे ज्यादा काबिल बनेगें, ऐसी उम्मीद मैं रखती हूँ।

अंत में आप सभी को उत्कल विश्वविद्यालय के पवित्र प्रांगण में स्नातकोत्तर हिंदी विभाग खुलने की अनेक-अनेक बधाई ।

उत्कल विश्वविद्यालय का प्लेटिनम महोत्सव! इस विद्यामंदिर की उपलब्धियों का परिगणन और नवीन संभावनाओं पर चिंतन! इस भव्य परिवेश की प्रतिक्रिया है- इस वर्ष नए हिंदी विभाग का प्रारंभ। अभी संस्कृत विभाग में ही हिंदी विभाग का कार्य चल रहा है। संस्कृत सभी आर्यभाषाओं की जननी है। हिंदी के विकास में उसका योगदान सर्वमान्य है, यहीं पर बरसों पहले हिंदी का डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाया जाता था। आज नए रूप में एम.ए. की पढ़ाई शुरू हुई है।

हिंदी भाषा देश की राजभाषा स्वीकृत हो गई है। यह जन-गण को जोड़नेवाली संपर्क भाषा है। एक राष्ट्र की एक संपर्क भाषा होना आवश्यक है। इसके लिए देशभर में प्रयत्न जारी है। उत्कल विश्वविद्यालय ने इस भाषा के अध्ययन-अध्यापन का बीड़ा उठाया है। यह एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कार्यक्रम है। इसे शीघ्र ही आरंभ करना चाहिए था।

खुशी की बात है कि विश्वविद्यालय के प्रवीण कुलपति की नजर इधर गई और उन्होंने विभाग खोलने का निर्णय लिया और मुझे संयोजक की जिम्मेदारी दी। मैं प्रसन्न हूँ कि मुझे यह महान कार्य सौंपा गया है। मैं पूरी लगन के साथ हिंदी विभाग के विकास के लिए कार्यरत हूँ। मुझे आशा है कि यह विभाग आगामी दिनों में पूर्णत: विकसित और उद्भासित होगा। कुलपति का उत्साह हमारा प्रेरणास्त्रोत है। पी.जी.कौंसिल की अध्यक्ष का मार्गदर्शन हमें परिपुष्ट कर रहा है। हिंदी के नामी दो प्राध्यापक-प्रो.राधाकांत मिश्र और प्रो.स्मरप्रिया मिश्र अपना अनमोल सहयोग दे रहे हैं। संख्या जितनी हो हमारे विद्यार्थी कर्म तत्पर है। मुझे विश्वास है, हम सफलता की सीढ़ियाँ पार कर सिद्धि प्राप्त करेंगे। यह नवोन्मेष पुष्पित-पल्लवित होगा। अपने कर्म से आभामंडित होगा। विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संस्कृति का वातावरण बनेगा।

मैं कुलपति को कृतज्ञता और सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।